RNI: RJHIN/ 2013/ 53539

शिव आमंत्रण

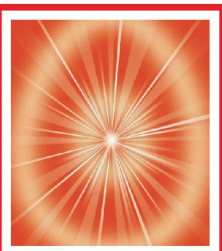

नर से नारायण बनका समय | महाशिवरात्रि विशेषांक | सिरोही, हिन्दी मासिक, जनवरी 2018

दुनिया का सबसे बड़ा सच... 82 वर्ष पूर्व हो चुका है परमात्मा का अवतरण, अब मिलन की अंतिम वेला

'यदा-यदा हि धर्मस्य ग्लानि...'

'गीता' में अपने वायदे अनुसार 'भगवान इस धरा पर आ चुके हैं'

1937	में संस्था की स्थापना	137	देश में फैला ईश्वरीय ज्ञान	4200	से अधिक सेवाकेंद्र	20	से अधिक प्रभाग	100	से अधिक मिले अवार्ड

यदा-यदा ही धर्मस्य, ग्लानिर्भवति भारत
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम्

अर्थात् जब-जब भारत में धर्म ग्लानि, पापाचार, भ्रष्टाचार, अत्याचार की अति होती है, तब-तब भारत में परमात्मा का अवतरण होता है। कलयुग के अंत और सतयुग के आदि के संगम पर ही परमात्मा का अवतरण होता है तो ये समय संगमयुग कहलाता है। इसी समय परमपिता परमात्मा प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर हम मनुष्यात्माओं को सहज राजयोग का ज्ञान देकर नर से नारायण और नारी से लक्ष्मी बनाकर सतयुग की पुनर्स्थापना करते हैं।

शिव आमंत्रण ■ आबू रोड

इस समय पूरी दुनिया बदलाव के मुहाने पर खड़ी है। हर चीज तेजी से बदल रही है। फिर चाहे प्रकृति हो या मनुष्य। मनुष्य आज हर वो कर्म कर रहा है जो एक समय कल्पना थी। ऐसे घृणित कर्म जिनके सोचने मात्र से ही रुह कांप जाती है। वहीं दूसरी ओर प्रकृति के भी ऐसे रूप हमारे सामने आ रहे हैं जो हमारी सोच से परे हैं। यही सृष्टि बदलाव के संकेत हैं... क्योंकि परिवर्तन ही संसार का नियम है। आज हम सुख-सुविधा संपन्न और तकनीकी युग में जीवन जी रहे हैं। भोग-विलासिता में लोगों का जीवन डूब गया है। अंतर्मन की शांति, आपसी प्रेम और सुकून चाहकर भी नहीं मिल रही है। शांति की चाह में हम मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारे की दौड़ लगा रहे हैं, लेकिन फिर भी अधूरापन सा लग रहा है। क्योंकि हमारी विधि ठीक नहीं है। यदि उस पिता परमात्मा को जानेंगे ही नहीं, तो कैसे हमें शांति की प्राप्ति होगी? कैसे हमारी जीवन नैय्या पार लगेगी? कौन करेगा इस सृष्टि का पुनः उत्थान? जिस देश से हम आत्माएं इस धरा पर पार्ट बजाने आई थीं वहां वापस कौन लेकर जाएगा? इन सब बातों के लिए परमात्मा को जानना बहुत जरूरी है। ...**विस्तृत अंदर**

परमात्मा के हाथों में जिंदगी

मेरी जिंदगी परमात्मा के हाथों में हैं। जैसे चलाता है वैसे ही मैं चलती हूं। ईश्वर ने जो पढ़ाया और जो पढ़ा रहा है उसे एक बच्चे की तरह पढ़ती हूं।

राजयोगिनी दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका, ब्रह्माकुमारीज़, माउंट आबू, राजस्थान

मूल्यों को लेकर अच्छा कार्य

ब्रह्माकुमारी संस्था नैतिक मूल्यों को लेकर अच्छा कार्य कर रही है। यहां की शिक्षा से कई लोगों का जीवन बदला है। मेरी शुभकामना है यह अपने लक्ष्य में सफल हो।

- नरेन्द्र मोदी, प्रधानमंत्री

परमात्मा के हाथों में जिंदगी

दादी के तन में बाबा आए, मुझे पता भी नहीं था कि वे बात भी करेंगे पर उन्होंने बात भी की। बहुत अच्छी अनुभूति हुई। परमात्मा का यह संदेश युवा पीढ़ी तक पहुंचाने की जरूरत है।

प्रतिभा पाटिल, पूर्व राष्ट्रपति

सम्भव है परमात्मा मिलन

यहां दिया जा रहा आत्मा-परमात्मा का ज्ञान स्पष्ट, तार्किक और वैज्ञानिक है। राजयोग के माध्यम से मन को परमात्मा में लगाकर उनसे मंगल मिलन मना सकते हैं।

द्रोपदी मुरमू, राज्यपाल, झारखंड

शिव पुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वे अध्याय में स्पष्ट लिखा है-

'सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमात्मा का चिंह्न शिवलिंग ही है'

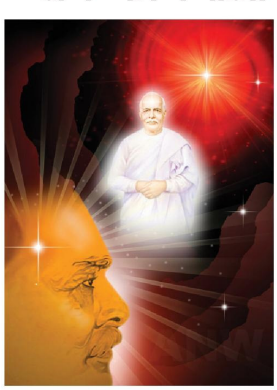

गीता, शिवपुराण, महाभारत और यजुर्वेद सभी धर्मग्रंथों में परमात्मा के अवतरण की बात स्पष्ट लिखी हुई है। शिवपुराण के कोटी रुद्र संहिता के 42वें अध्याय में लिखा है **'मैं ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट होऊंगा'** अर्थात् 'समस्त संसार पर अनुग्रह करने के लिए शिव ब्रह्माजी के ललाट से प्रकट हुए और उनका नाम रुद्र हुआ। परमात्मा शिव ने ही ब्रह्मा मुख द्वारा नई सृष्टि रची। जब ब्रह्मा द्वारा सतयुगी सृष्टि रचने का कार्य तीव्र गति से नहीं हुआ, तब शिव ने ब्रह्मा की काया में प्रवेश किया। ब्रह्मा को पुनर्जीवित कर उनके मुख द्वारा नई सृष्टि रचने का कार्य आरंभ किया'।

शिव पुराण में यह उल्लेख अनेक बार आया है। साथ ही स्पष्ट लिखा है कि 'सर्व कामनाओं को पूर्ण करने वाले परमात्मा का चिंह्न शिवलिंग ही है। सृष्टि के विनाशकाल में एक अद्भुत ज्योतिर्लिंगम प्रगट हुआ जो न घटता था, न बढ़ता था। वह अनुपम, अव्यक्त था। उस द्वारा ही सृष्टि का आरंभ हुआ' अर्थात् परमात्मा शिव ने प्रजापिता ब्रह्मा द्वारा ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देकर इस दुःख से भरे तमोगुणी वातावरण को परिवर्तन किया। इससे शास्त्रों में ब्राह्मणों को ब्रह्ममुख वंशावली कहा गया।

महाभारत के शांतिपर्व श्लोक संख्या 337-24-25 में लिखा है कि 'भगवान ने नई सृष्टि की रचना के लिए ब्रह्मा की बुद्धि में प्रवेश किया'। साथ ही लिखा है सबसे पहले जब यह सृष्टि तमोगुण और अंधकार से आच्छादित थी तब एक अण्डाकार ज्योति प्रकट हुई। वह ज्योतिर्लिंग ही नए युग के स्थापना के निमित्त बना। उसने कुछ शब्द कहे और प्रजापिता ब्रह्मा को अलौकिक रीति से जन्म दिया और इस सृष्टि का कल्याण किया।

अवजानन्ति मॉं मूढा मानुशी तनुमाश्रितम, परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्। परमात्मा ने गीता के नौवें अध्याय के 11वें श्लोक में कहा है कि 'मनुष्य तन का आश्रय लेने वाले मूढ़मति लोग मुझे नहीं जानते। यद्यपि मैं महेश्वर (परमात्मा) हूं तो भी व्यक्त भाव वाले लोग मुझे पहचान नहीं सकते'।